प्रथम दीक्षांत समारोह

15 नवंबर, 2018

कुलपति का संबोधन

डॉ0 रमेश चन्द्र श्रीवास्तव

माननीय कुलपति

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर
Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University, Pusa, Samastipur

प्रथम दीक्षांत समारोह

15 नवंबर, 2018

डॉ0 रमेश चन्द्र श्रीवास्तव

माननीय कुलपति

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

कुलपति का संबोधन

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर
Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University, Pusa, Samastipur

माननीय राष्ट्रपति एवं इस विश्वविद्यालय के कुलाध्यक्ष, श्री राम नाथ कोविन्द जी, माननीय राज्यपाल बिहार, श्री लाल जी टंडन जी, माननीय मुख्य मंत्री, बिहार, श्री नीतीश कुमार जी, माननीय कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्री, भारत सरकार, श्री राधा मोहन सिंह जी, माननीय कृषि मंत्री, बिहार, डॉ0 प्रेम कुमार जी, कुलाधिपति डॉ0 प्रफुल्ल कुमार मिश्र जी, कुलसचिव, डॉ0 रवि नन्दन, माननीय मंत्रीगण, माननीय सांसदगण, माननीय विधान मंडल के सदस्यगण, विश्वविद्यालय प्रबंधन न्यास के माननीय सदस्यगण, विद्वत परिषद, अनुसंधान परिषद, प्रसार परिषद के माननीय सदस्यगण, सभी सम्मानित अतिथिगण, विश्वविद्यालय परिवार के सदस्य, मेरे प्रिय विद्यार्थी, मीडिया के सदस्य, महिलाओं एवं सज्जनों,

आप सभी का आज इस विश्वविद्यालय प्रांगण में प्रथम दीक्षान्त समारोह के अवसर पर हार्दिक स्वागत।

आज हम सभी के लिए गौरव का क्षण है कि हमारे माननीय राष्ट्रपति एवं विश्वविद्यालय के आदरणीय कुलाध्यक्ष, श्री राम नाथ कोविन्द जी हमारे बीच हैं। उनकी प्रेरणा एवं आशीर्वाद से आज हम इस दीक्षान्त समारोह को

कर पा रहे हैं। अपने बहुमूल्य समय में से उन्होंने इस दीक्षान्त समारोह के लिए समय दिया है। पूरा विश्वविद्यालय आज आपके स्वागत के लिए पलक पाँवड़े बिछा कर खड़ा है और मैं व्यक्तिगत रूप से तथा पूरे विश्वविद्यालय की तरफ से आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ।

इस विश्वविद्यालय का अहोभाग्य है कि महामहिम राज्यपाल, बिहार, श्री लालजी टंडन जी प्रथम दीक्षान्त समारोह में उपस्थित हैं। अपने व्यस्त कार्यक्रम में से समय निकालकर आज आप हमें आशीर्वाद दे रहे हैं, इसके लिए हम आपके अत्यन्त आभारी हैं। विश्वविद्यालय परिवार इस अवसर पर आपका हार्दिक स्वागत करता है।

यह मेरा सौभाग्य है कि आज विश्वविद्यालय परिसर में हमें अपने लोकप्रिय माननीय मुख्य मंत्री श्री नीतीश कुमार जी का स्वागत करने का अवसर मिला है। श्रीमान्, बिहार कृषि के विकास के लिए पिछले दस वर्षों में तीन Agriculture Road Map बनाकर उनका क्रियान्वयन करना कृषि विकास के प्रति आपकी कटिबद्धता का प्रतीक है। विश्वविद्यालय परिवार आपका स्वागत करते हुए यह आश्वासन देता है कि Agriculture Road Map के क्रियान्वयन में अपनी पूरी भूमिका निभाएगा।

माननीय कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्री, श्री राधा मोहन सिंह जी, इस विश्वविद्यालय के अभिभावक हैं। यह हमारा सौभाग्य है कि हमें उनका नेतृत्व मिला है। विश्वविद्यालय को इन ऊँचाईयों पर ले जाने का श्रेय उनको जाता है। श्रीमान आपके आशीर्वाद के लिए विश्वविद्यालय आपका कृतज्ञ हैं और आज प्रथम दीक्षान्त समारोह में आपका हार्दिक स्वागत करता है।

माननीय कृषि मंत्री, बिहार सरकार, डॉ0 प्रेम कुमार जी की इस विश्वविद्यालय के क्रिया कलापों में पूरी रूचि रही है और उनका आशीर्वाद इस विश्वविद्यालय को मिल रहा है। श्रीमान् आज विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त समारोह में आपकी उपस्थिति से पूरा विश्वविद्यालय अति प्रसन्न है और आपका हार्दिक स्वागत करता है।

मैं विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ0 प्रफुल्ल कुमार मिश्र जी का आभारी हूँ कि उन्होंने इस दीक्षान्त समारोह की अध्यक्षता स्वीकार की है। विश्वविद्यालय परिवार आपका हार्दिक स्वागत करता है।

मैं माननीय मंत्री श्री महेश्वर हजारी जी, श्री प्रमोद कुमार जी, सांसद श्री नित्यानंद राय जी, श्री रामचन्द्र पासवान जी, श्री अजय निषाद जी, बिहार विधान मंडल के माननीय सदस्यों का इस दीक्षान्त समारोह में आने के लिए आभार प्रकट करता हूँ और हार्दिक स्वागत करता हूँ।

मैं विश्वविद्यालय प्रबंध बोर्ड के सदस्यों, विद्वत परिषद के सदस्यों, सभी सम्माननीय अतिथियों, विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों, जिला प्रशासन के अधिकारी, मीडिया के मित्रों एवं विद्यार्थियों का हार्दिक स्वागत करता हूँ। अपने व्यक्तिगत रूप से एवं विश्वविद्यालय की तरफ से मैं आज उन सभी विद्यार्थियों, जो आज उपाधि ग्रहण कर रहे हैं, को बधाई देता हूँ। यह उपाधि कक्षाओं, प्रयोगशालाओं और खेतों में आपके कड़े परिश्रम का फल है। मुझे पूरी उम्मीद है कि आप इस विश्वविद्यालय के ambassador बनेंगे और जहाँ भी आप रहेंगे इस विश्वविद्यालय के नाम, सम्मान को ऊँचा रखेंगे। जीवन पथ पर आप की हर सफलता हमारे लिए गौरव का विषय रहेगी।

अब मैं विश्वविद्यालय की गतिविधियों एवं उपलब्धियों पर अपनी रिपोर्ट पेश करना चाहूँगा :

कृषि शिक्षा

यह विश्वविद्यालय कृषि क्षेत्र के लिए मानव संसाधन तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान देता रहा है। यह कार्य छः कॉलेज, सात अनुसंधान केन्द्र तथा चौदह कृषि विज्ञान केन्द्रों के द्वारा किया जा रहा है। विश्वविद्यालय कृषि, सामुदायिक विज्ञान, मत्स्यकी विज्ञान में B.Sc (Hons.)

की डिग्री, कृषि अभियंत्रण एवं जैव तकनीक में B.Tech की डिग्री तथा कृषि, कृषि अभियंत्रण, जैव तकनीक एवं सामुदायिक विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में Ph.D एवं P.G. Degree देता है। 2018–19 सत्र से हमने Horticulture & Forestry में B.Sc, (Hons) का कोर्स एवं Aquaculture, Fisheries Resources Management, Farm Machinery, Microbiology, Pomology (Fruit Science) में P.G. Degree और ग्रामीण प्रबंधन में MBA का नए कोर्स शुरू किया है।

इस दीक्षान्त समारोह में 270 विद्यार्थीयों को स्नातक, 85 विद्यार्थियों को परास्नातक तथा 17 विद्यार्थियों को Ph.D की उपाधि दी जाएगी। 33 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक दिए जायेंगे और यह गर्व की विषय है कि उसमें से 25 लड़कियाँ है।

पिछले अकादमिक सत्र से आई0सी0ए0आर0 की प्रवेश परीक्षा से विश्वविद्यालय के विभिन्न कोर्स में प्रवेश दिया जा रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर इस परीक्षा के चलते अब विश्वविद्यालय में देश की पूरी विविधता परिलक्षित हो रही है जब देश के विभिन्न राज्यों के बच्चे यहाँ पढ़ रहे हैं।

देश के विभिन्न राज्यों से आए बच्चों की सुविधा के लिए प्रवेश की प्रक्रिया को Single Window System

किया गया है। बाहर से आने वाले विद्यार्थियों की सुविधा के लिए समस्तीपुर रेलवे स्टेशन पर हेल्प डेस्क और समस्तीपुर से पूसा तक के लिए बस की सुविधा दी गई थी।

हम माननीय मुख्य मंत्री जी के बहुत आभारी हैं कि उन्होंने विश्वविद्यालय के बिहार के undergraduate students के लिए रू0 2,000/– की छात्रवृत्ति देने का फैसला किया। हम माननीय कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह जी के कृतज्ञ हैं कि उन्होंने PG और Ph.D को क्रमशः रू0 3,000/– और रू0 4,500/– मासिक छात्रवृत्ति देने के हमारे प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। इससे विश्वविद्यालय के सभी छात्रों को किसी न किसी प्रकार की छात्रवृत्ति मिल रही है।

छात्रों की सुविधा एवं बेहतर पढ़ाई के लिए लाइब्रेरी की सुविधाएँ आधुनिक मानकों के हिसाब से बढ़ाई गई है तथा लाइब्रेरी के क्रिया कलाप को e-mode में क्रियान्वित किया गया है। सभी Class room को State of art digital podium से सुसज्जित किया गया है। शिक्षकों की कमी पढ़ाई के लिए एक constraint हो रही थी। मुझे यह बताते हुए खुशी है कि पिछले तीन महीनों में हमने 36 पद भरे हैं और अगले माह करीब 34 पद और भरे जाऐंगे। यह भी एक संतोषजनक बात है कि नए शिक्षक हिमाचल प्रदेश

से मेघालय तक तथा दक्षिण में तमिलनाडु तक से हैं। अनुसूचित जाति एवं जन जाति के सभी आरक्षित पद भर गए हैं।

अनुसंधान भारतीय कृषि शिक्षा का एक आवश्यक अंग है जिससे हम अपने किसानों के लिए नई तकनीकें विकसित करते हैं। माननीय प्रधान मंत्री ने पूर्वी भारत को द्वितीय हरित क्रांति के लिए चिन्हित किया है और साथ ही 2022 तक किसानों की आमदनी दुगनी करने का लक्ष्य रखा है। इस विश्वविद्यालय ने प्रधान मंत्री जी के उस सपने को पूरा करने के लिए अपने अनुसंधान लक्ष्यों को निर्धारित किया है। इस समय कुल 81 अनुसंधान परियोजनाएँ चल रही हैं। विश्वविद्यालय ने धान, रबी, मक्का, दलहन एवं तिलहन फसलें, Millets कन्दमूल फसलों की नई प्रजातियों तथा उनके खेती के लिए समग्र फसल प्रणाली विकसित की हैं और नई प्रजातियों के विकसित करने का कार्य सतत्पूर्ण जारी है।

बिहार राज्य दुर्भाग्यवश सूखे एवं जलमग्नता दोनों को झेलता है। बिहार की कृषि के विकास के लिए इससे निजात पाना आवश्यक है। इसको ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय ने एक Centre of Excellence on Water Management स्थापित किया है जिसका

शिलान्यास माननीय राष्ट्रपति जी के ही कर कमलों द्वारा हुआ था। यह बताते हुए मुझे बहुत हर्ष है कि हमने छोटे किसानों द्वारा कम लागत में भूगर्भजल के उपयोग के लिए Single phase 3 hp submersible pump के प्रयोग की तकनीक विकसित की है। इससे बिजली के पारेषण के लिए खर्चीले infrastructure की आवश्यकता से छुटकारा मिलेगा। प्रधान मंत्री के सौर ऊर्जा के उपयोग पर जोर देने के लक्ष्य के तहत विश्वविद्यालय ने तीन सौर ऊर्जा आधरित सिंचाई प्रणाली विकसित की है, जिससे नदी के किनारे दूर–दराज के खेतों तथा ताल क्षेत्रों में सिंचाई की जा सकती है।

जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न समस्याओं से हमारे किसान जूझ रहे हैं। इन समस्याओं के निदान पर समेकित अनुसंधान के लिए विश्वविद्यालय ने एक Centre for Advance Studies on Climate Change impact in Ganga Basin की स्थापना की है जिसमें एक multi disciplinary team काम करेगी। हालाँकि हम climate change के mitigation और adaptation के विभिन्न पहलुओं पर कार्य कर रहे हैं और इसमें सफलता भी मिली है। जैसे धान की कम जल आवश्यकता वाली प्रजातियाँ, Terminal heat tolerance वाली गेहूँ की प्रजातियों,

धान–गेहूँ की फसल प्रणाली जिसमें गेहूँ की फसल को अप्रैल मास में होने वाली ओलावृष्टि बारिश से बचाया जा सके आदि शामिल हैं पर समेकित अनुसंधान से हम किसानों को एक समन्वित package दे सकेगें। NABARD के सहयोग से हम एक परियोजना भी चला रहे हैं।

ग्रामीण युवाओं की बेरोजगारी इस समय की ज्वलन्त समस्या है। कृषि उत्पाद के विविधिकरण तथा खाद्य प्रसंस्करण से इस समस्या का समाधान हो सकता है। विश्वविद्यालय इस दिशा में कार्यरत है। शहद उत्पादन तथा मधुमक्खी के अन्य उत्पाद, मशरूम उत्पादन के साथ–साथ मशरूम के उत्पादों पर जोर, कटाई उपरांत हानि को कम करना, बाँस के विभिन्न उत्पाद ताकि समाज के आखिरी पायदान वाले व्यक्ति को रोजगार मिले, बकरी के कृत्रिम गर्भाधान, बटेर पालन आदि कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जिनपर विश्वविद्यालय ने कुछ सफलतायें हासिल की है।

माननीय प्रधानमंत्री के स्वच्छ भारत अभियान के तहत हमने wealth from waste कार्यक्रम शुरू किया है। हमारी पूरी कालोनी के household waste, छात्रावासों के waste को हर रोज इकठ्ठा किया जाता है और उसे वर्मी कम्पोस्ट इकाई में भेज दिया जाता है जहाँ organic

waste से वर्मीकम्पोस्ट बनता है तथा recyclable waste को recycling करने का प्रयास किया जाता है।

कृषि प्रसार विश्वविद्यालय के क्रिया कलापों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसे हम अपने कृषि विज्ञान केन्द्रों, विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा संचार माध्यमों से करते हैं। हमारा मौसम विभाग किसानों को मौसम की अग्रिम भविष्यवाणी के साथ सलाह भी देता है। राज्य के करीब 70,000 किसान Mobile SMS और Whatsapp application के साथ हमसे जुड़े हैं और वे हमारी सलाह से मौसम की मार से बचने के लिए प्रयास करते हैं। हमारा प्रयास है कि हम सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों में Automatic weather station लगाएं और उस सूचना के आधार पर मौसम की जानकारी जिला मुख्यालय पर Display Board पर आम जनता एवं किसानों के लिए दें, जैसा हमने विश्वविद्यालय द्वार पर किया है।

हमारे कृषि विज्ञान केन्द्र कृषि के विभिन्न पहलुओं पर कृषकों, कृषक महिलाओं, ग्रामीण युवाओं तथा प्रसार कार्यकर्त्ताओं को प्रशिक्षण दे रहे हैं। पिछले तीन वर्षों में करीब डेढ़ लाख किसान, 25,000 ग्रामीण युवा तथा 20,000 प्रसार कार्यकर्त्ताओं को प्रशिक्षण दिया गया है। मशरूम उत्पादन एवं मधुमक्खी पालन के प्रशिक्षण अत्यंत लोकप्रिय

हैं और इन प्रशिक्षणों के चलते इन दोनों के उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। विश्वविद्यालय के एक अध्ययन से पता चला है कि जिन परिवारों के पुरूष सदस्य बाहर चले गए हैं उन महिलाओं को कृषि तकनीक की जानकारी नहीं मिल पा रही है। विश्वविद्यालय इस दिशा में प्रयास कर रहा है।

हमारे प्रसार कार्यक्रमों को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान मिला है। कृषि विज्ञान केन्द्र, पिपराकोठी को सर्वश्रेष्ठ कृषि विज्ञान केन्द्र का पुरस्कार मिला है। दो किसानों को भी बिहार कृषि कानक्लेव में प्रथम पुरस्कार मिला है।

बीज उत्पादन

बीज उत्पादन के क्षेत्र में विश्वविद्यालय ने काफी प्रगति की है। ब्रीडर बीज के उत्पादन में हम राज्य की सारी आवश्यकता पूरी कर रहें हैं। पिछले चार वर्षों में विभिन्न फसलों के अलग–अलग तरह के करीब 25,000 क्विन्टल बीज का उत्पादन हुआ है। 2017–18 वर्ष में हमने करीब 2 करोड़ रूपये का बीज विक्रय किया है। हमारे कृषि विज्ञान केन्द्रों ने भी बीज और planting materials के उत्पादन में उल्लेखनीय प्रगति की है। आने वाले वर्षों में हमारे कृषि विज्ञान केन्द्र सब्जी, फल एवं बाँस के पौधों के उत्पादन में नए आयाम स्थापित करेंगे।

आधारभूत संरचना विकास

विश्वविद्यालय के स्टाफ एवं छात्रों को रहने के लिए बेहतर सुविधाएँ देने के लिए सभी पुराने छात्रावासों एवं आवासीय सुविधाओं का जीर्णोद्धार किया गया है। छात्राओं की संख्या काफी बढ़ी है और इसके लिए दो नए महिला छात्रावास बन रहे हैं। पाँच नये शैक्षणिक भवन भी बन रहे हैं। परिसर की सभी मुख्य सड़कों का पुनः निर्माण किया गया है और Street light की व्यवस्था की गई है। पुराने auditorium का जीर्णोद्धारण कर एक खूबसूरत सभागार का निर्माण हुआ है। 96 नए आवासीय क्वार्टरों का निर्माण हो रहा है। 50 बिस्तरों के एक अस्पताल का भी निर्माण चल रहा हैं। सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों के फार्मों की चहारदीवारी का निर्माण हो गया है और केवल इसी के कारण फार्म की उत्पादकता 15 प्रतिशत बढ़ गई है। विश्वविद्यालय और कृषि विज्ञान केन्द्रों के फार्मों पर आधुनिक सिंचाई सिस्टम लगाए जा रहे हैं।

विश्वविद्यालय का करीब एक सौ हेक्टेयर क्षेत्र ढ़ाब में है जो पहले करीब–करीब unproductive थी। आज उस पूरे क्षेत्र को बीज एवं चारा उत्पादन के लिए उपयोग

किया जा रहा है और एक मॉडल के रूप में विकसित किया गया है जिसे हम पूरे बिहार में लागू कर सकते हैं।

भारत सरकार के लक्ष्य के अनुसार RESCO Model के तहत Roof Top Solar Power System पूरे विश्वविद्यालय में लगाया गया है। इस Solar Power Plant की क्षमता 700 किलोवाट है।

श्रीमान्, आज विश्वविद्यालय के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है। केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय बनने के बाद हमने नए आयाम छुए हैं और हमारा लक्ष्य इसको देश के अग्रणी कृषि विश्वविद्यालयों में लाना है। साथ ही हमारा लक्ष्य है कि अनुसंधान और प्रसार के जरिए हम पूर्वी भारत एवं बिहार के किसानों की माली हालत सुधारे और द्वितीय हरित क्रांति के वाहक बने। इसके लिए आप सभी का आशीर्वाद और सहयोग चाहता हूँ।

इस अवसर पर मैं अपनी तरफ से तथा पूरे विश्वविद्यालय की तरफ से अपने प्रथम राष्ट्रपति, जिनके नाम पर यह विश्वविद्यालय है को श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

एक बार पुनः मैं उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को उनकी नई जिन्दगी की शुरूआत पर बधाई देता हूँ और उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामना देता हूँ।

आज इस दीक्षान्त समारोह के अवसर पर पधारे सभी अतिथियों का एक बार पुनः स्वागत एवं अभिनन्दन। आपने यहाँ आकर हमें कृतार्थ किया है और इसके लिए हम आप सबके कृतज्ञ और आभारी हैं।

जय हिन्द।